अंक 8, कुल पृष्ठ, 8 घृणा पाप से करो पापी से नहीं—अज्ञात मूल्य मात्र 10 रुपए मास अगस्त 2014

अमर उजाला
उत्तर प्रदेश

अंतिम अवतार कल्कि का इंतजार 1 अगस्त 2014

अब तो मीडिया ने भी स्वीकारा कि भगवान श्री कल्कि का अवतार हो गया है तभी तो जगह जगह पर उनकी मूर्तियाँ लग रही हैं और भक्तों की पुकार पे प्रगट होना बाकी है

एक विश्वास एक पूजा

विष्णु के चौबीस या दस अवतारों में सभी की पूजा आराधना उनके अवतरण के बाद शुरू होती है। एक कल्कि ही ऐसे अवतार हैं जिनकी प्रतीक्षा है। लेकिन उनकी पूजा आस्तिक जगत में प्रचलित है। यही नहीं उनके चरित को लेकर कल्कि पुराण एक स्वतंत्र शास्त्र रचा गया है। उस अवतार के भारत भर में जगह जगह मंदिर बने हुए हैं। कुछ मंदिरों का विवरण इस तरह है—

1. मथुरा : (उ.प्र.) गोवर्धन स्थित श्री गिरिराज मंदिर परिसर में कल्कि भगवान का मंदिर स्थापित है। मंदिर के बोर्ड में कलियुग की समाप्ति की सूचना अंकित है। साथ ही कल्कि को श्रीकृष्ण का अवतार बताया गया है।
2. जयपुर : (राजस्थान) जयपुर में आमेर की ओर जानेवाली सड़क हवा महल के सामने भगवान कल्कि का प्राचीन मंदिर है। जयपुर के संस्थापक सवाई जयसिंह ने सन् 1739 में कल्कि भगवान के मंदिर का निर्माण दक्षियाणन शिखर शैली में करवाया था।
3. काठमांडू : (नेपाल) नेपाल में भी कल्कि जी का एक मंदिर है और कल्कि बैंक भी है।
4. सम्भल : (मुरादाबाद, उ.प्र.) जहाँ कल्कि अवतार होना है, वहाँ पर कल्कि भगवान का मंदिर निर्मित है। यहाँ हर साल जुलाई-अगस्त में कल्कि महोत्सव धूमधाम से मनाया जाता है।
5. साबला : (राजस्थान) राजस्थान, मध्यप्रदेश और गुजरात की त्रिवेणी संगम स्थल, राजस्थान के बांगड़ अंचल के डूंगरपुर जिले के साबला गाँव में हरि मंदिर है जहाँ कल्कि जी की पूजा हो रही है।
6. दिल्ली : महरौली स्थित योगमाया शक्तिपीठ में कल्कि भगवान का एक मंदिर है। कई दूसरे देवी देवताओं के मंदिरों में भी कल्कि जी की प्रतिमा है।

नेपाल में श्री कल्कि नाम से कल्कि बैंक

भगवान श्री कल्कि की ज्योत में अश्व के दर्शन

कोलकाता में सुश्री रश्मि गनेरीवाल द्वारा 8, राजा संतोष रोड, अलीपुर कोलकाता में 26 जुलाई 2014 को आयोजित कल्कि जी के फूल बंगला उत्सव में भगवान श्री कल्कि की ज्योत में अश्व के दर्शन

ब्रह्मांड अंधा है/कल्कि जी भी कलियुग के आगे मजबूर हैं पृष्ठ-6

श्री कल्कि के प्रचार कार्य (प्रोजेक्ट पर) करने वालों पर उपचार शीघ्र फलदायी दो सप्ताह, पाँच डॉक्टर, छः उपचार समस्या का 100 प्रतिशत समाधान पृष्ठ-3

भगवान कल्कि राम,कृष्ण से ज्यादा दयालु हैं पृष्ठ-4

जब श्री कल्कि जी देश-विदेश में मेरे आधार बनें पृष्ठ-5

अब कल्कि का काम करने वालों कमी नहीं पृष्ठ-6

भगवान श्री कल्कि की रामलीला में सवारी 25 सितंबर से 4 अक्टूबर 2014 तक
कृष्ण अवतार की माखन लीला कल्कि अवतार में बनी स्वप्न वाणी जागृत अनुभव लीला

भगवान श्री कल्कि की शोभायात्रा बड़ी रामलीला (आसफ अली रोड, रामलीला ग्राउन्ड) में 11 दिन होती है। इनके द्वारा बड़े पैमाने पर दोपहर व रात में (प्रतिदिन दो बार) सवारी दिल्ली के प्रमुख बाजारों से निकलती है एवं छोटी रामलीला (परेड ग्राउण्ड वाली) जिनमें आठ से दस लाख भक्त सपरिवार भगवान के विभिन्न सुंदर रूपों के दर्शन करते हैं। श्री कल्कि बाल वाटिका (रामलीला सवारी प्रभारी) श्री हितेश गुप्ता (सुपुत्र बैकुंठवासी श्री विनोद गुप्ता, हाथी दांतवाले) के तत्वाधान में प्रतिवर्ष की भाँति 25 सितंबर से 4 अक्टूबर 2014 तक निकालने का कार्यक्रम है।

रथं कल्कि दृष्टवा पुनर्जन्म न विद्यते (रथ पर सवार भगवान कल्कि के दर्शन करने से पुनर्जन्म नहीं होता)

सुर वृन्द नमित पद कंज द्वन्द, दर्शन से कट रहे यम के फन्द

(भगवान श्री कल्कि के दोनों चरण कमल के समान हैं जिनको देवता भी प्रणाम करते हैं क्योंकि उनके दर्शन मात्र से यमराज के फन्दे कट जाते हैं।)

है कोटि जन्म अधराशि नाश, कर रहे अघ्रि-हृदि तिमिर ह्रास

(भगवान श्री कल्कि की झांकी का दर्शन करोड़ों जन्म के इकट्ठे पापों को भस्म कर देता है तथा हृदय के अंधकार को दूर कर देताहै।)

इस शोभा यात्रा की व्यवस्था के लिए निम्नलिखित मदों में अनुमानित न्यौछावर—

1. बड़ी रामलीला शुल्क..... 5,100.00
2. छोटी रामलीला शुल्क 3,500.00
3. ट्रक-ट्राली किराया.....25,000.00
4. बिजली का जनरेटर किराया 7,100.00
5. श्री कल्कि भगवान का साहित्य वितरण 6,900.00
6. दैनिक श्रमिक व अन्य खर्च प्रतिदिन..... 2,500.00
7. फूलों की झांकी प्रतिदिन..... 5,300.00
8. श्री कल्कि भगवान का प्रसाद वितरण प्रतिदिन.... 1,800.00
9. श्री कल्कि भगवान का शृंगार 12 दिन (आर्टिस्ट द्वारा मेकअप).....3,500.00

आपका सपरिवार भगवान का दर्शन हमारे लिए सहयोग से भी ज्यादा अमूल्य होगा।

आप अपना सहयोग उपरोक्त सत्कार्यों में किसी एक मद में पूरा या हिस्से में देना चाहें तो आपके नाम से अथवा गुप्त सहर्ष स्वीकार करके उसी मद में लगाया जाएगा। श्री कल्कि बाल वाटिका के परिवार वाले सदस्य एवम् बालक दस वर्ष से बड़े, झाँकी पर स्वरूपों में यदि भाग लेना चाहते हैं तो नि:संकोच श्री रोहित गुप्ता (सुपुत्र बैकुंठवासी श्री विनोद गुप्ता, हाथी दांतवाले) से संपर्क कर सकते हैं। आप अपना बहुमूल्य सहयोग रामलीला सवारी प्रभार समिति के किसी भी सदस्य को भेज सकते हैं या नीचे दिये फोन पर बता सकते हैं।

श्रीयोगेश गुप्ता	श्री हितेश गुप्ता (सुपुत्र बैकुंठवासी श्री विनोद गुप्ता, हाथी दांतवाले)	श्री आदर्श सिंघल
23973383	9899499848	9818525601

यमुना तट पर सुप्त तीर्थ जागरण हेतु चलता फिरता श्री कल्कि जयंती महोत्सव

3 अगस्त एवं 7 सितंबर रविवार 2014 को

असंभव को संभव करने वाला संभल में होने वाला श्री कल्कि सहस्त्रनाम यज्ञ 6 जुलाई 2014 को इन्द्रपस्थ यमुना तट पर दो कुण्डीय यज्ञ संकीर्तन, सत्संग प्रात: 5 बजे से 8 बजे तक लघु भंडारे के रूप में है।

स्थान: सागर में नैया डगमग डोले को सहारा देने वाली यमराज की बहन यमुना महारानी के घाट न० 23 पर

आपके द्वारा किया जाने वाला दो कुण्डीय श्री कल्कि सहस्त्रनाम-बगलामुखी यज्ञ-संकीर्तन-भण्डारे का स्वयं संपूर्ण से भी ज्यादा फल चाहते हैं तो अपने हिस्से से भी ज्यादा सहयोग (सामान अथवा नगद रूपया) यमुना तीर्थ के लिये ऊपर लिखे तीन प्रभारियों में से किसी को भी एवं सम्भल गंगा तीर्थ के लिये सुश्री इंदु बंसल, श्री सुनील गुप्त (सुश्री सुषमा गुप्त के भाई) अथवा मामाजी को दे सकते हैं। संभल तीर्थ की तरह यमुना तीर्थ महोत्सव में आने जाने पर समय की कोई पाबंदी नहीं है। पहली आरती हवन के बाद एवं दूसरी आरती कीर्तन के बाद होगी। विशिष्ट जानकारी अथवा संतुष्ट न होने पर मामाजी 011-23973383 यमुना तट पर श्री कल्कि सहस्त्रनाम - सत्संग - संकीर्तन प्रभारी

श्री राकेश-सुरभि अग्रवाल-श्री अशोक-संजू गड़ोदिया- कु० अक्षय गड़ोदिया

9810654193 9312539397 9910006788

NBT नवभारत टाइम्स

यमुना बनेगी साबरमती

प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने यमुना नदी को गुजरात की साबरमती बनाने की तैयारी शुरू कर दी है। गंगा की तरह यमुना की सफाई के लिए भी केन्द्र सरकार ने 25 करोड़ का बजट पास किया है।

श्री कल्कि के प्रचार कार्य (प्रोजेक्ट पर) करने वालों पर उपचार शीघ्र फलदायी

दो सप्ताह, पाँच डॉक्टर, छः उपचार-समस्या का 100 प्रतिशत समाधान

तीन डॉक्टर

—सुश्री संगीता गर्ग (9873349478)

16 जुलाई 2014 को मेरा बेटा आदित्य दुकान पर बैठा हुआ था। अचानक उसके पेट में बहुत तेज दर्द उठा उसने फौरन दुकान के पास में ही डॉक्टर को दिखा कर दवाई ले ली और उसका पेट दर्द रूक गया। रात को घर आने पर उसे फिर असहनीय दर्द शुरू हो गया। हमने दूसरे डॉक्टर को दिखाया क्योंकि पहले डॉक्टर की दवाई से आराम नहीं आ रहा था। दूसरे डॉक्टर ने अल्ट्रा साऊंड करवाया लेकिन उसमें भी कुछ नहीं आया। पेट का दर्द कम नहीं हो रहा था डॉक्टर को भी समझ नहीं आ रहा था कि अल्ट्रा साऊंड ठीक होने के बाद भी ऐसा क्यों हो रहा है? हमने अब तीसरे डॉक्टर को दिखाया उन्होंने ब्लड शुगर, लीवर इत्यादि के टेस्ट लिखे। मरता क्या नहीं करता वह सब भी हमने करवाए वह भी ठीक आए तीसरे डॉक्टर ने भी यही कहा कि घबराने की कोई बात नहीं है सब ठीक हो जाएगा। लेकिन मेरे बेटे के पेट का दर्द बढ़ता जा रहा था।

18 जुलाई की शाम को मेरे बेटे ने कहा कि मुझसे अब दर्द बर्दाश्त नहीं हो रहा, मुझे मैक्स अस्पताल में ले चलो। हमने डॉक्टर से बात की तो उन्होंने भी कह दिया कि अगर दर्द इतना ज्यादा है तो आप देर मत लगाइए इसे अस्पताल में भर्ती करवा दीजिए। उसकी असहनीय पीड़ा देखकर मैं और मेरी बहू दोनों रो पड़े। मैंने रोते-रोते मामाजी को फोन किया और सारी बात कह सुनाई। मामाजी बोले घबराओ नहीं। मामाजी ने तुरंत ज्योत जगाकर यह उपचार करने को बताए—

1. 129 रुपए-हनुमान जी योगी-योगिनी
2. 20 रुपए और 14 परांठे दुर्गा जी
3. 20 रुपए और 5 परांठे हल्दी के माँ बगुलामुखी के
4. 20 रुपए योगमाया जी
5. 70 रुपए भैंरो जी की दवाई (शराब) वाले उपचार के
6. पौनी कटोरी चीनी एक सिक्का हाथ लगाकर धनवंतरी वैद्य जी के पाँच हवन के संकल्प करने को कहा।

मंत्र—हक् अनीह निष्कलंक गौरण्डा दुष्टहा नाशनं पापहा

मैंने बिना एक पल की देरी किए इन सभी उपचारों का संकल्प ले लिया। उपचारों की प्रार्थना स्वप्नानुभव एक संपदा पुस्तक के पृष्ठ 205 से 219 में से कर के चुकी ही थी कि मेरी बहू जो मेरे बेटे को अस्पताल ले कर गई थी उसका वहीं से फोन आया कि मम्मी अब आप रिपोर्ट लेकर अस्पताल मत आना आदित्य का पेट दर्द एकदम ठीक हो गया है। डॉक्टर ने भर्ती करने के लिए मना कर दिया

मैं हतप्रभ हो कल्कि जी के उपचारों की महिमा को महसूस करती रही। मैंने तीन दिन अपने बेटे को दर्द से तड़पते हुए देखा था। शुरू के दो दिन तो हम सोचते रहे कि यह गैस या बदहजमी का दर्द होगा लेकिन तीसरे दिन हम सभी के हौसले पस्त हो चुके थे। भगवान श्री कल्कि के उपचारों द्वारा हम बहुत बड़े अनिष्ट से बच सके। मेरा रोम-रोम कल्कि जी का आभारी है। मैं तो यही कहूँगी कि यदि हम पूर्वाग्रह छोड़कर सच्चे मन से कल्कि जी की आराधना के साथ-साथ उनके प्राकट्य के प्रचार का कार्य* करें तो उनके द्वारा प्रदान उपचारों का पूर्ण रूपेण फायदा मिलता है।

** आजकल मैं और मेरी पुत्री श्री कल्कि जी के प्रचार प्रसार के लिए अग्रवाल समाज समाचार पत्रों में कार्यरत हैं।*

एक डॉक्टर

—सुश्री इंदू बंसल (9818416191)

मेरे बेटे हर्षित गुप्त को 21 जुलाई से लगातार बुखार चढ़ रहा था जो कि डॉक्टर की दवाई से सिर्फ 2 या तीन घंटे के लिए उतर रहा था लेकिन शाम होते ही फिर चढ़ जाता था। कुछ समझ नहीं आ रहा था। डॉ. को बार बार दिखाया। उसके कहने से दो टेस्टिंग भी कराई। रिपोर्ट ठीक थीं उसमें कुछ नही आता था। हम तो परेशान थे ही डॉ. भी परेशान था कि क्या कारण है जो ऐसा हो रहा है? इस पर उसने कहा कि अब रात को और देख लो नहीं तो 25 जुलाई को सुबह अस्पताल में भरती करवा दो।

मैं एकदम टूट सी गई। उसकी निर्जीव सी शक्ल देखती तो सहम जाती थी। इस पर मैंने मामाजी को फोन किया जो एक मीटिंग में बैठे थे। उन्होंने मुझे कहा कि संगीता जी (रमणी की माता जी) को फोन करूँ जो उपचार उन्होंने अपने बेटे आदित्य के लिए किए थे वह कर दूँ। मैंने उन्हें तुरंत फोन किया और संकल्प लेकर सभी उपचार कर दिए और कल्कि जी की कृपा से मेरे बेटे का बुखार नियंत्रण में भी आ गया और वह बिल्कुल ठीक हो गया।

** आजकल मैं कोलकाता में प्रकाशित हो रहे सम्भल माहात्म्य के कार्य से जुड़ी हूँ।*

एक डॉक्टर

—सुश्री पूजा गुप्त (9811858723)

30 जुलाई 2014 को मेरी बेटी के स्कूल से सुबह 10 बजे फोन आया कि उसकी आँख में साइंस लैब में एसिड (HCL) गिर गया है। हम उसे दरियागंज अस्पताल लेकर जा रहे हैं आप फौरन अस्पताल पहुंच जाएं। मैंने घबराकर मेघा दीदी को फोन किया और सारी बात बताई। 29 जुलाई 2014 को हम सभी (मामाजी, मेघना गोयल, रेनू बंसल, सुषमा गोयल, पूजा गुप्त, अनिरूद्ध गुप्त) नोएडा में बी-6, सैक्टर-3 स्थित कल्कि जी के साहित्य ऑफिस में मीटिंग के लिए मिले थे जहां मामाजी ने हमें संगीता गर्ग की आपबीती बताई थी और उपचार लिखवाए थे। मेघा दीदी बोलीं कि अरे तुम फौरन कल नोएडा में जो उपचार हमने लिखे थे सारे कर दो और महिमा के लिए प्रार्थना करो कि वह सही सलामत घर वापिस आए। मैंने बिना एक पल की देरी किए मंदिर में ज्योत जगाकर सारे उपचार कर दिए। दोपहर 2 बजे मेरे

—शेष पृष्ठ 5 पर

भगवान कल्कि राम, कृष्ण से ज्यादा दयालु हैं

(घट में कल्कि को बैठा लो, बैंक की तरह जो चाहो सो पा लो)

—लेखिका : सुश्री इंदू बंसल-9818416191

कल्कि अवतार निर्मोही (सख्त/कठोर) अवतार नहीं है यह सबसे ज्यादा करूणामयी अवतार है बस जरा अदले का बदला सब अवतारों की तरह चाहते हैं। उन्हें भक्तों से विशेष रूप से भुगतान नहीं चाहिए। बल्कि अनादि काल से यही विधि का विधान है कि मनुष्य अपने तप से अपनी भक्ति से और अपनी आराधना से दैविय शक्तियों द्वारा **जो कुछ भी प्राप्त करता है उसे बनाए रखने के लिए उसे निरंतर तप करना होता है।** जब भक्त वरदान पाकर अपनी पूजा अर्चना और तपस्या के प्रति लापरवाह हो जाता है तो उसकी उपलब्धियों (जो भगवान से भाग्य में न होते हुए पाया है और उसे अपना मान बैठा है) का धीरे-धीरे वह वापिस (घटनी शुरू) होने लगती है। हमारे पुराणों में ऐसे बहुत से उदाहरण मिलते हैं कि कई जन्मों के पुण्य कर्म क्षण भर के पाप से नष्ट हो जाती है। कई बार कई जन्मों के पापों का विमोचन एक विशिष्ट पुण्य कर्म के द्वारा हो जाता है।

* ब्रह्मा जी सृष्टि के रचियता हैं। लेकिन जब उनके द्वारा भी मर्यादा के विपरीत कार्य होता है तो स्वयं भगवान शंकर ने उनका एक सर अपने त्रिशूल से काट दिया था।

* भगवान श्रीकृष्ण की कृपा से पांडवों को इन्द्रप्रस्थ का राज्य मिला एवं वे संपूर्ण आर्यव्रत के चक्रवर्ती सम्राट कहलाए। पर भगवान कृष्ण को नजरअंदाज कर खोखले धर्म, दुनियादारी की रक्षा का बहाना लेकर कौरवों की सभा में धूत खेलने गए। पल भर में ही चक्रवर्ती सम्राट से वनों में जीवन चलाने के लिए भिखारियों की तरह दर दर भटकने वाले वनवासी हो गए।

* रावण की तपस्या एवं भक्ति से प्रसन्न होकर देवाधिदेव महादेव ने रावण को सोने की लंका का अधिपति माना उसकी नाभि में अमृत कलश स्थापित कर उसे अमरत्व प्रदान किया। पर तपस्या और भक्ति से प्राप्त हुई वैभवता ने उसे अंधा कर दिया। वह भक्ति के मार्ग को छोड़कर भोगों एवं अनाचार में लिप्त हो गया। परिणाम क्या हुआ? सोने की लंका धू धू करके जल गई और नाभि में विराजमान अमृत भी उसे मृत्यु से नहीं बचा पाया। पुत्र, परिवार, धन, राज्य सब कुछ उसे गंवाना पड़ा एक प्रचलित कहावत है—**एक लख पूत सवाल खनाती, उस रावण के दिया न बाती**

जो अपयश प्रकाण्ड शिव भक्त रावण को मिला वह आज तक किसी को नहीं मिला। हर वर्ष बुराई के प्रतीक के रूप में उसके पुतले को उसके भाई और बेटे के साथ जलाया जाता है।

* सीता स्वयंवर के समय भगवान श्री राम ने जब स्वयंवर में रखा हुआ शिव धनुष तोड़ा तो भगवान परशुराम अत्यंत क्रोधित होकर स्वयंवर में उपस्थित हुए। उन्होंने भगवान राम को ललकारा कि उनका साहस कैसे हुआ भगवान शिव के धनुष को भंग करने का। तब मर्यादा पुरूषोत्तम श्रीराम ने परशुराम के क्रोध को शांत करने का पूरा प्रयत्न किया उन्होंने विनम्र शब्दों में कहा, '' मैं दशरथ पुत्र राम आपको नमन करता हूँ और कहा स्वयंवर में रखी प्रतिज्ञा को पूर्ण करने के लिए उन्होंने सिर्फ धनुष को झुका कर प्रत्यंचा बांधनी चाही थी पर धनुष टूट गया, यह शायद महादेव की इच्छा थी।'' पर इस पर भी परशुराम का क्रोध शांत नहीं हुआ और उन्होंने श्रीराम को अपन धनुष देते हुए चुनौती दी कि इस धनुष पर शरसंधान करके दिखाओ। प्रभु श्रीराम ने मजबूर होकर उनकी आज्ञा का पालन करके उनके धनुष पर तीर चलाया। उसी क्षण भगवान परशुराम को श्रीराम के स्वयं नारायण होने की अनुभूति हुई। तब भगवान परशुराम ने गद्‌गद् होकर भगवान श्रीराम को नमन किया। लेकिन अब भगवान राम मजबूर थे क्योंकि विधान के अनुसार वे धनुष पर चढ़ाए गए तीर को बिना चलाए वापस तरकश में नहीं रख सकते थे। तब उन्होंने भगवान परशुराम से ही पूछा कि ''यह तीर मैं आप पर तो चला नहीं सकता लेकिन यह अमोघ बाण है। बिना कुछ नष्ट किए यह वापस भी नहीं हो सकता। अब आप ही बताएं कि इस तीर से मैं आपकी मन की गति से कहीं भी पहुंचने वाली शक्ति को नष्ट करूँ अथवा आपकी सैकड़ों वर्षों की तपस्या से निर्मित हुए सातों पुण्य लोकों को नष्ट करूँ।'' अब पशुराम विवश थे। स्थिति की गंभीरता को समझते हुए सृष्टि के विधान को स्वीकार करते हुए उन्हें कहना पड़ा , ''नहीं राम! मैंने इस धरती को जीत कर अपने गुरु को दान कर दिया था इसलिए मैं पृथ्वी पर रात्रि को निवास नहीं कर सकता मुझे मन की गति से अपने निवास स्थान महेन्द्र पर्वत पर पहुंचना अति आवश्यक है इसलिए आप मेरी तपस्या से अर्जित पुण्य लोकों को नष्ट कर दें।''

क्रोध और अहंकार में कलियुग का वास होता है यदि उस क्षण परशुराम अपने क्रोध और अहंकार को नियंत्रित कर पाते तो वे शांत मन से सीता स्वयंवर की परिस्थितियों का अवलोकन कर सकते थे। तब उन्हें उसी क्षण सारी बात समझ में आ जाती और वह श्रीराम को पहचान लेते। लेकिन क्रोध ने उनके विवेक और अंर्तदृष्टि पर पर्दा डाल दिया और उन्हें अपने पुण्य नष्ट करवाने पड़े।

इस उदाहरण के द्वारा हम समस्त कल्कि समाज से अपील करते हैं आज कलियुग की मायावी शक्तियाँ भक्तों के विवेक (बुद्धि, मन, दिमाग) पर पर्दा डाल कर उन्हें क्रोधी और अहंकारी बना रही है। इसके कारण वे कल्कि कल्कि रटने के पश्चात् भी भयंकर गल्तियाँ कर बैठते हैं।

स्वप्नानुभव में मिले निर्देशों का सही तरीके से पालन नहीं करते और कलियुग की शक्तियाँ छलावे की तरह आकर उनके नाम, जाप, हवन, पाठ आदि से अर्जित पुण्यों को उड़ा कर ले जाती हैं। और भक्त ठगा सा रह जाता है कि इतना नाम जाप हवन पूजा कीर्तन सत्संग किया फिर ऐसा क्यों? स्वप्नानुभव में जो कुछ अच्छा उसने देखा होता है वह तो उपचारों द्वारा प्राप्त नहीं कर पाता लेकिन जो बुरे स्वप्नानुभव होते हैं वे पूर्ण रूप से सत्य हो जाते हैं। (इंकम टैक्स, सेल्स टैक्स, एक्साइज, भारत सरकार की दण्डनीय शक्तियाँ-कलियुग की-यम की दण्डनीय शक्तियों से पीड़ित होकर न रात को नींद न दिन का चैन रहता है)

संभल में श्री कल्कि सहस्त्रनाम यज्ञ एवं संकीर्तन

24 अगस्त 2014 को माँ चामुंडा मंदिर हल्लू सराय में

संभल सहस्त्रनाम हवन में जाने हेतु ए.सी. बस की बुकिंग के लिए संपर्क करें सुश्री मुक्ता शर्मा—9811134378

भगवान श्री कल्कि का जन्मोत्सव

स्थान : प्राचीन शिव मंदिर
नोएडा, सैक्टर-18, रैडिसन होटल के सामने
समय : प्रातः 10 बजे से दोपहर 2 बजे तक
प्रातः 10 बजे : श्री कल्कि हवन महामंत्र यज्ञ
दोपहर 11 बजे से 1 बजे तक : कल्कि संकीर्तन
संपर्क : सुश्री मुक्ता शर्मा 9811134378

—पृष्ठ 3 का शेष

पति महिमा (बेटी) को घर लेकर आए। उन्होंने बताया कि डॉक्टर ने कहा कि आपकी बेटी की सीधी आँख _की रोशनी जाने से बच गई क्योंकि उसकी आँख में हाइड्रोक्लोरिक एसिड गिरा था। यह इतना तेज होता है कि इससे आँख की रोशनी जा सकती थी। मेरा रोम-रोम मेरे कल्कि जी के प्रति ऋणी हो गया है।

** आजकल मैं कल्कि जी की आने वाली पुस्तक कल्कि सहस्त्रनामावली पर कार्य कर रही हूँ।*

यह सभी भक्त हर शुभ कार्य का फल समर्पण भगवान श्री कल्कि के चरणों में इस प्रार्थना के साथ करते हैं—हे कल्कि भगवान गौ, विप्र, धर्म, सज्जन लोगों की, जो बच्चे कल्कि जी का काम कर रहे हैं उनकी, जो बच्चे गर्भ में हैं और कल्कि जी का काम करेंगें, जो बच्चे पैदा होने वाले हैं और कल्कि जी का काम करेंगें उनकी रक्षा कीजिए। हमें ऐसी शक्ति दीजिए जिससे हम सहपरिवार, स्वस्थ शरीर से सुखी भाव से वैभवतापूर्वक राजा रानियों की तरह भगवान कल्कि के प्राकट्य, प्रचार का संपूर्ण कार्य करें।

जब श्री कल्कि जी देश-विदेश में मेरे आधार बनें

संकलन कर्ता- पूजा गुप्ता मो० 9811858723

आज मैं 50 वर्ष की हो गई हूँ। मैं बहुत छोटी थी, मेरी सहेली के भाई की शादी हुई। भाभी घर में आईं। भाभी जी कूचा पाती राम की रहने वाली थीं। उनके साथ हमारे घर में कल्कि जी का नाम आया। उनको मैं हमेशा कल्कि जी का नाम लेते देखती थी। हमारे घर में सब देवी देवताओं की पूजा की जाती थी परन्तु हनुमान जी की पूजा विशेष रूप से होती थी। भाभी जी अक्सर मुझ से कहती थीं बहन जी कल्कि जी की एक माला किया करो। परन्तु मैंने कभी भी इस बात को गंभीरता से नहीं लिया। मैं बड़ी हो गई शादी हो गई। शादी के बाद बहुत से दुख आए। भाभी जी को जब कभी भी कोई दुख बताती थी, तो वह हमेशा एक ही बात कहती थीं, ''बहन जी कल्किजी की माला करके तो देखो आपके कैसे कष्ट दूर हो जाएंगे।'' वो किस दिन की बात है वह याद नहीं है पर मैंने कल्कि जी का नाम लेना शुरु कर दिया।

धीरे धीरे विपरीत स्थितियाँ बदलने लगीं। आज न जाने क्यों शायद कल्कि जी की कृपा से ही मेरा कल्कि जी के साहित्य के लिए कुछ काम करने का मन कर रहा है। आप सब कल्कि भक्तों से बहुत सी बातें बाँटना चाहती हूँ। अभी मैं आपको अपने पुत्र के एक नवीनतम अनुभव बता रही हूँ।

मेरे पुत्र ने पूना से अपनी आर्कीटेक्ट की पढ़ाई की। फिर चार साल दिल्ली में नौकरी की। अब वह आगे की पढ़ाई के लिए अमरीका गया है। वहां उसने रहने के लिये एक घर किराए पर लिया। परन्तु न जाने उस घर में क्या था कि वह मुझ से हमेशा कहता था कि माँ मुझे उस घर में रहना बिलकुल अच्छा नहीं लगता। उसकी सीढ़ियाँ चढ़ते भी मुझे डर लगता है। अन्य कोई घर उसे उसके बजट में नहीं मिल रहा था।

एक दिन उसने मुझे बताया कि मम्मी मुझे अपने पलंग के सामने बैठी अवस्था में बैठा एक नाग (सांप) दखाई दिया। मैंने कल्कि अनुभव पैनल के मैम्बरों से पूछकर वासुकी जी के कुछ दिन उपचार आगरा में किये। इसका परिणाम इतना अच्छा हुआ कि कुछ ही दिन में उसे एक बहुत अच्छा घर मिल गया। उस घर में जाते ही उसका मन सकारात्मक उर्जा से भर गया। अब वह वहाँ मन लगाकर पढ़ाई कर रहा है। तथा पढ़ाई के साथ-साथ उसकी पार्ट टाइम नौकरी भी लग गई है।

वह इतनी दूर है फिर भी कल्कि जी की कृपा से अब मुझे उसकी जरा भी चिंता नहीं होती। ऐसा लगता है जैसे कल्कि जी ने उसे अपनी छत्र छाया में रखा हुआ है।

ब्रह्मांड अंधा है/कल्कि जी अनुभव देने के बाद कलियुग के आगे मजबूर हैं

—लेखिका सुश्री इंदू बंसल (9818416191)

नियत (कुछ नहीं होता/सब ठीक है/कोई देख थोड़ी रहा है) आलस्य, प्रमाद से मिली कुर्की (नीलामी) (ढोल पीट कर कुर्क जमीन/नुकसान) कलियुग हमारे ही नहीं श्री कल्कि भगवान के पीछे भी पड़ा रहता है। पहले मामाजी की बातें बाबाओं (साधु-महात्माओं) की तरह डराने वाली व अटपटी लगती थीं। समझ में ही नहीं आता था कि वह यह क्या क्यों कह रहे हैं। कुछ समय बाद हमको समझ में आने लगा जब वैसा ही बाल वाटिकाओं के दृष्टाओं के साथ प्रत्यक्ष घटित हुआ। लेकिन संलग्न सरकारी दस्तावेज से यह मालूम चलता है कि देश-विदेश में व्यापार करते हुए मामाजी पर एवं एक्साइज डिपार्टमेंट भारत सरकार व व्यापारिक मुकदमे तो आम रहते थे लेकिन उनकी चौतरफा व्यस्तता के बीच ब्रह्मांड अथवा कल्कि भगवान भी कलियुग के आगे असमर्थ रहे। इसके कारण 1984 में मामाजी पर कुड़की आई। जिसकी कॉपी सामने लगी है।

1984 में मामाजी को 6,750 रुपए की कुर्की आई

सब ठीक होने पर नीलामी/कुर्की का रुपया वापिस लेकिन 1985 में भगवान ने श्री गुरुजी द्वारा मामाजी को अनुभव में मृत्यु से बचने का यमुना महारानी द्वारा उनके भाई यमराज का सामान देने का उपचार बताना शुरू किया। जैसे-जैसे कलियुग ज्यादा पैर पसारता गया अर्थात् कल्कि भक्तों को तंग करने लगा श्री कल्कि जी ने वैसे-वैसे उपचार (संकल्प-दान) कल्कि भक्तों को अनुभवों में बताने शुरू कर दिए। उसी का शुभ परिणाम यह मिला कि मामाजी की मेहनत व भगवान श्री कल्कि के उपचारों की मदद से वही कुर्की का रुपया 1989 में भारत सरकार के उसी डिपार्टमेंट द्वारा मामाजी को वापिस मिला, जिसकी कॉपी ऊपर लगी है।

1989 में भारत सरकार के उसी डिपार्टमेंट द्वारा मामाजी को कुर्की का रुपया वापिस मिला

श्री हनुमान जी/ठाकुर रामकृष्ण परमहंस की श्री कल्कि के प्राकट्य की पुकार निष्फल नहीं जाएगी — भगवान श्री कल्कि को प्रगट तो होना ही है। उनको प्राकट्य के लिए प्रचार की आवश्यकता है। भजन, कीर्तन, सत्संग, हवन के साथ भगवान श्री कल्कि की मूर्ति स्थापना प्रचार का एक बहुत बड़ा साधन है। गुरु जी ने अपने भजन में भी लिखा—

दिल खुशी से सरोचश्म जो झुक गया, उसके पापों का पर्दा तुरत फुक गया। उसके घट में प्रगट कल्कि भगवान है, भाग्यशाली जगत में वह इंसान है॥

ऐसे में भगवान श्री कल्कि ने किस प्रकार एक नहीं अनेक भक्तों के प्रयासों से श्री गौरी शंकर मंदिर में अनुभव व उपचारों के द्वारा महज 12 वर्ष के बाद मूर्ति लगवाई है। प्रस्तुत है 1997 में मैनेजिंग कमेटी शिवाला आपा गंगाधर, गौरी शंकर मंदिर के सैक्रेटरी श्री प्रेम चन्द गड़ौदिया द्वारा मामाजी को लिखा पत्र (देखें अगले पृष्ठ पर) धन्य है भगवान श्री कल्कि के अनुभवों एवं अनुभवों में आए उपचारों जिनकी वजह से 9 नवंबर 2009 को भगवान श्री कल्कि का ध्वज श्री गौरी शंकर मंदिर में लहराया।

निष्कर्ष : भगवान श्री कल्कि बहुत दयालु हैं, हर तरह से मदद को तैयार हैं, गलती हमारी अनुभवों को समझने उनके उपचारों एवं ब्रह्मांड की चाहत को समझने की है.....शेष अगले पृष्ठ पर

सत्संगमयी अनुभव गोष्ठी

दिनांक : शनिवार 9 अगस्त एवं 13 सितंबर 2014
स्थान : जी-3 थर्ड फ्लोर,मित्रद्वीप अपार्टमेंट पटपड़गंज दिल्ली-92
समय : दोपहर 1 बजे से 5 बजे तक
संपर्क : श्री सुनील गर्ग, सुश्री संगीता गर्ग (9873349478)
संचालिका- सुश्री मेघना गोयल (913677829)

दिनांक : शनिवार 2 अगस्त एवं 6 सितंबर 2014
स्थान : एम.के. हाउस, सी-2/8
अशोक विहार फेज-2 दीप सिनेमा के सामने, नई दिल्ली
समय : दोपहर 1 बजे से 5 बजे तक
संपर्क : श्री राकेश गोयल, सुश्री सुषमा गोयल (9899698240)
संचालिका- सुश्री इंदू बंसल (011-32448401)

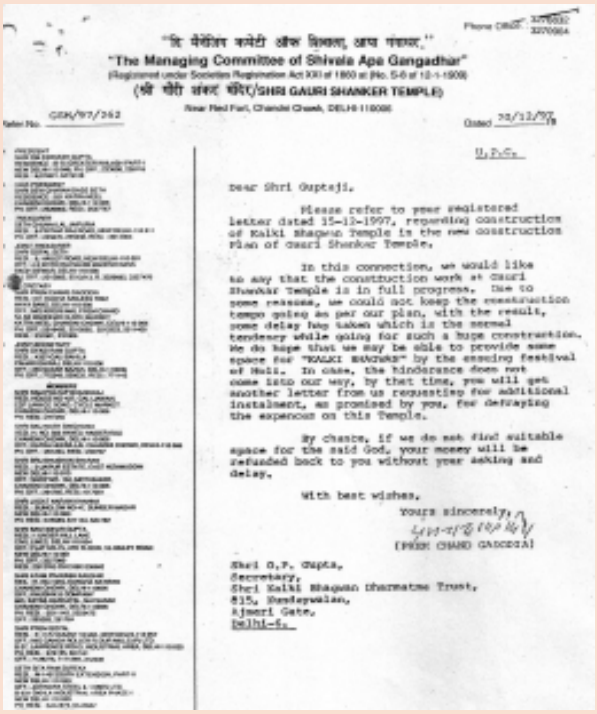

"दि मैनेजिंग कमेटी ऑफ शिवाला आपा गंगाधर,"
"The Managing Committee of Shivala Apa Gangadhar"
(Registered under Societies Registration Act XXI of 1860 at (No. S-6 of 12-1-1909)
(श्री गौरी शंकर मंदिर/SHRI GAURI SHANKER TEMPLE)
Near Red Fort, Chandni Chowk, DELHI-110006

Refer No. GSM/97/342

Dated 30/12/97

U.P.C.

Dear Shri Guptaji,

Please refer to your registered letter dated 15-12-1997, regarding construction of Kalki Bhagwan Temple in the new construction Plan of Gauri Shankar Temple.

In this connection, we would like to say that the construction work at Gauri Shankar Temple is in full progress. Due to some reasons, we could not keep the construction tempo going as per our plan, with the result, some delay has taken which is the normal tendency while going for such a huge construction. We do hope that we may be able to provide some space for "KALKI BHAGWAN" by the ensuing festival of Holi. In case, the hindrance does not come into our way, by that time, you will get another letter from us requesting for additional instalment, as promised by you, for defraying the expences on this Temple.

By chance, if we do not find suitable space for the said God, your money will be refunded back to you without your asking and delay.

With best wishes.

Yours sincerely,

(PREM CHAND GADODIA)

Shri O.P. Gupta,
Secretary,
Shri Kalki Bhagwan Dharmatma Trust,
815, Kundewalan,
Ajmeri Gate,
Delhi-6.

1997 में मैनेजिंग कमेटी शिवाला आपा गंगाधर, गौरी शंकर मंदिर के सैक्रेटरी श्री प्रेम चन्द गड़ौदिया द्वारा मामाजी को लिखा पत्र।

कल्कि जी 9 नवंबर 2009 को श्री गौरी शंकर मंदिर में विराजे

9 नवंबर 2009 से 7 जुलाई 2014 तक भगवान श्री कल्कि की 60 मूर्तियाँ सिद्धपीठों, शक्तिपीठों, ज्योतिर्लिंगों मे लगीं

अगले अंक में पढ़ें—

*** स्वप्न महत्वपूर्ण क्यों?**

*** जब कल्कि जी ने मिट्टी से पैसे वसूले**

*** सम्भल सहस्त्रनाम यज्ञ के संकल्प से वर्षो पुरानी ज्वैलरी मिली**

*** 5 प्रतिशत के संकल्प से मेरी फंसी ज्वैलरी निकली-ससुर की ज्वैलरी निकल कर फंसी**

मानूं मैं न मानूं

अब कल्कि का काम करने वालों की कमी नहीं है

—मामाजी (9312533445)

श्री कल्कि के कामों का संदेश हम लीफलैट-मासिक पत्रिका के द्वारा देते हैं। श्री कल्कि के काम के लिए किसी से आँख से आँख मिला कर किसी से एक रुपया नहीं मांगते चाहे कोई अपनी मर्जी से हजारों लगा दे। श्री कल्कि भगवान का काम धन व चन्दे का मोहताज नहीं है। जहाँ हमें इस बात का ख्याल रखना है वहीं यह भी ध्यान रखें कि सनातन धर्म के अन्य देवी देवताओं जैसे श्रीराम, श्रीकृष्ण, श्रीहनुमान, श्रीदुर्गा जी, गऊ व धार्मिक कार्यों के लिए तो सारा हिंदू समाज जन्म से ही परिचित होता है और वह इन देवी-देवताओं के कार्यों के लिए तो मांगने पर तो क्या बिन मांगे ही अधिक मात्रा में धन खुलकर खर्च करते हैं।

भगवान श्री कल्कि ही नहीं सभी देवी देवता अपना बोल-कबोल का हिस्सा मांगते हैं। आज से 15 वर्ष पूर्व मामाजी ने सोचा था कि कल्कि भगवान सबसे बड़े हैं जिनमें सभी देवी-देवताओं की बोल-कबोल आ जाती है। लेकिन नहीं अपने भाई के कहने पर बांके बिहारी से उन्होंने कहा कि मेरे बेटे-बेटी की शादी करवा दो मैं आपके 56 भोग लगाऊँगा। ऐसे ही किसी कार्य का दुर्गा जी का जागरण (चौंकी) अपने मन से किसी परेशानी में बोला था। दोस्तों, थोड़े समय बाद बिहारी जी अपना 56 भोग मांगने और दुर्गा जी चौंकी मांगने आ गईं। इस पर मेरी पत्नी ने कहा कि तुम कैसे कल्कि वाले हो जी जो कि कल्कि के होकर और देवी देवताओं की बोल-कबोल करते हो। अरे कल्कि जी का कीर्तन (चौकी), कल्कि जी के 56 भोग, कल्कि जी की सवा मनी की बोल कबोल करो और करवाओ। तभी से हमने यह शुरू किया और उत्तरोत्तर बढ़ते जा रहे हैं। अभी 20 जुलाई 2014 को सुश्री कनिका मोदी ने गौरी शंकर मंदिर में कल्कि जी की सवा मनी के लड्डू बांटे हैं।

दोस्तों, जो कल्कि जी का काम कर रहे हैं व करेंगे। श्री कल्कि उन्हें सुखीभाव व वैभवता प्रदान कर रहे हैं और करते रहेंगे। अत: कल्कि वाले भावुक न बनते हुए कल्कि जी के शुभ का रुपया श्री कल्कि जी के प्राकट्य व प्रचार के संपूर्ण कार्यों में लगाते चले जाएं रोकें नहीं, **रोकते हो तो उस पर ब्याज दो** वर्ना वह (अनाज मण्डी/कपड़ा मण्डी वालों की तरह जहाँ आप आम दिवाले सुनते हैं) **पाप में बदलता चला जाएगा।** यहां हम जो श्री कल्कि भगवान के कार्यों में रुपया लगाने की बात कर रहे हैं वह पुरूषों की आमदनी का एक प्रतिशत, गृहणियों के लिए घर खर्च के मिले रुपयों में से पाँच प्रतिशत बच्चे जेब खर्च व उपहारों में मिले रुपए का दस प्रतिशत रुपया निकालें। बाकी का रुपया आप घर खर्चों, किसी भी अन्य धार्मिक कार्यों व अस्पताल, अनाथालाय, अंध विद्यालय व समाज के विभिन्न कार्यों में लगाने को पूर्ण स्वतंत्र हैं।

मैंने (मामाजी) ने लगभग आठ वर्ष तक 6 घंटे श्री गुरु जी के साथ सत्संग में यह जाना कि जब महालक्ष्मी-महाविष्णु ही सबको तपों व कर्मों के अनुरूप अपूर्व धन वैभव (जैसे धनाढ्य लोगों को) देते हैं। जब हम उन्हीं के प्राकट्य के प्रचार का कार्य कर रहे हैं तो हम औरों से आँखों से आँख मिलाकर धन क्यों माँगे? हमारा काम आलस्य प्रमाद त्याग कर स्वप्नानुभवों के हिसाब से उनके प्राकट्य प्रचार के कार्य करना है। फिर तो वह घर, व्यापार और अपने प्राकट्य का कार्य स्वयं हम भाग्यवानों से कराएंगे।

Registered with the Registrar of Newspaper for India under Licence No. Delhi-N/2005/15596 Postal D. No. DL (DG)-11/8061/2012-2014

publication date 1-31 august | मूल्य 10 रूपए | posting date1-8 august | अगस्त 2014 | weight-25 grams

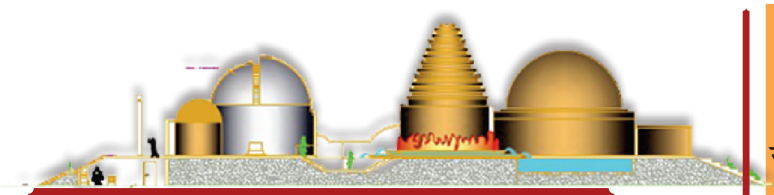

मामाजी जयपुर में मूर्तिकार के यहाँ 24 जुलाई 2014 को कुमार श्रेयांस गुप्त को कल्कि भगवान की मूर्ति के मुख की सौम्यता की बारीकियों से अवगत कराते हुए

कल्कि संग्रहालय में आप देखेंगे

*भारत भूमि पर हमारा जन्म हमारे सौभाग्य की गाथा गाता है * भारत भूमि श्री हरि नारायण की भूमि है * भगवान विष्णु के दशावतार * अभी कल्कि क्यों? * कलियुग के लक्षण * कल्कि जी ने अवतार क्यों लिया? * हनुमान जी/रामकृष्ण परमहंस हमारे गुरु क्यों? * प्राचीन भारत एवं आधुनिक भारत में अंतर * कल्कि जी की पुकार क्यों करें? * कल्कि जी की स्वप्नानुभव लीला * कल्कि की पुकार ही सार है * कल्कि जी की भक्ति कैसे करें? * कल्कि जी का प्रचार कैसे करें? * धर्म/भक्ति/ज्ञान और कल्कि * श्री कल्कि साहित्य*

ऑडियो सी.डी.

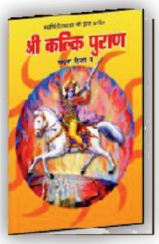

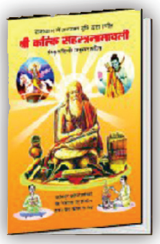

डी.वी.डी.

यू.एस.बी. | पैन ड्राइव

मंत्र बॉक्स

श्री कल्कि जी का शुभ का खजाना

अपनी आमदनी में से कम से कम एक प्रतिशत अधिक से अधिक दस प्रतिशत रुपया भगवान श्री कल्कि के शुभ के खजाने में डालें।

इस खजाने को कहाँ लगाएं?—श्री कल्कि बाल वाटिका की संस्कार रोपण कार्यशालाओं, श्री कल्कि जी के हवनों, सत्संग, कल्कि जी के उपचारों में, कल्कि जी के महोत्सवों-कीर्तन, अनुभव गोष्ठी, मूर्ति स्थापना, शोभा यात्रा, कल्कि जी के उत्सवों में आने जाने मे, कल्कि जी के आगामी बनने वाले संग्रहालयों में एवं कल्कि जी के अन्य प्रचार के कार्यों में लगाएं। साहित्य में कम से कम 25 से 30 प्रतिशत अवश्य लगाएं, इससे आपके घर एवं व्यापार के प्रगति के मार्ग योजनाबद्ध तरीके से खुलते चले जाएंगे।

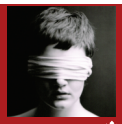

अंधा है वह दिवस जहाँ आदित्य नहीं है
अंधा है वह धर्म जिसमें साहित्य नहीं है

कल्कि साहित्य समाधि के कगार पर

कल्कि जी का शुभ का खजाना

बन पड़े तो अपने शुभ के रुपयों में से सहयोग साहित्य प्रभारियों के पास भेजें

मेघना गोयल-916377829 पूजा गुप्त-9811858723 सुषमा गोयल-9899698240
रेनू बंसल-9818000004 रश्मि गुप्त-9711108050 मामाजी-9136377829

कल्कि जी का शुभ का खजाना

श्री कल्कि बाल वाटिका संस्कार रोपण कार्यशालाएं

*** दिल्ली विश्वविद्यालय* नोएडा * पंजाबी बाग * पटपड़गंज * गगन विहार * यमुना विहार * महावीर नगर * ग्रीन पार्क**

श्री कल्कि बाल वाटिका

के सदस्य बनने हेतु सम्पर्क करें—
☎ 9312533445, 9136377829, 9811858723

न करने का न करवाने का झंझट बस फोन करते रहें जब तक काम पूरा न हो मंदिरों में भगवान श्री कल्कि जी की मूर्ति, पोशाक, लाईट प्रभारी : हर्षित गुप्ता, (मनु) 9999885277) अंकित गड़ौदिया (9968154304) राहुल अग्रवाल (9891879718) अलका गोयल (9811281271)

❖पालनपुर ❖देहरादून ❖असरोही ❖कोलकाता ❖चेन्नई
1903/3, पहली मंजिल, चाँदनी चौक, दिल्ली-110006 सम्पर्क : 23886646, 23866661
हाउस नं. 4116, कसेरू वालान, पहाड़गंज, नई दिल्ली-55, सम्पर्क : 23587079
सी 0-2/16, राजौरी गार्डन, नई दिल्ली-110035
कॉलेज कम्पाउन्ड, गीता सोसाईटी, पालनपुर : 385001, गुजरात, सम्पर्क : 02742-258068, 09824968440
जी 97, नेहरु कालोनी, देहरादून (उत्तरांचल), सम्पर्क : 0135-2671643, 09837343560
2 नम्बर, हाईट रोड, लिलुआ, हावड़ा-711204 (कोलकाता)
आभार/Ack.: श्री कल्कि पुराण, ऋग वेद, ऋषि प्रसाद, स्वामी राम सुखदास, नवभारत टाइम्स
योगेश प्रकाश गुप्ता, दिल्ली द्वारा प्रकाशित व अन्य बालकों के ज्ञानवर्धन हेतु
प्रिंटर्स : शिवानी ऑफसैट, ए-36 नोएडा, गौतम बुद्ध नगर (यू.पी.)
पारस प्रिंटिंग प्रैस, पटपड़गंज, नई दिल्ली